2 जून 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/-   आर. एन. आई. 31109/77   RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 5   सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**   आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539)   सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**   वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देवलाली में 47वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन

देवलाली (नासिक-महा.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित 47वें श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह मंगलवार, दिनांक 21 मई, 2013 को श्री हिम्मतलाल हरिलाल शाह मुम्बई की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ।

ध्वजारोहणकर्त्ता श्री प्रदीपभाई खारा मुम्बई ने स्वागत भाषण दिया। शिविर का उद्घाटन श्री अशोकभाई रतीलाल घीया मुम्बई द्वारा हुआ।

इस अवसर पर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. अभिनन्दनजी खनियांधाना, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित कोमलचन्दजी टडा, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, श्री प्रमोदजी मकरोनिया आदि महानुभाव मंचासीन थे।

उद्घाटन समारोह में ब्र. यशपालजी ने आगन्तुक विद्वद्गण एवं अतिथियों का स्वागत करते हुये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर का परिचय दिया तथा शिविर की रूपरेखा पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा ने बताई। पण्डित अभयजी शास्त्री ने 50वाँ शिविर भी देवलाली में ही लगाये जाने की भावना व्यक्त की।

सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने किया।

शिविर के प्रथम दिन लगभग 500 साधर्मियों की उपस्थिति में नित्य नियम पूजन के उपरान्त गाजते बाजते जुलूसपूर्वक कहान नगर की परिक्रमा की गई। तत्पश्चात् श्री प्रदीपभाई खारा मुम्बई के करकमलों से ध्वजारोहण हुआ एवं उद्घाटन के पश्चात् गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित अभयजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ मिला। •

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ
4 से 13 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
2 से 9 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्युषण
9 से 18 सितम्बर	इन्दौर	दशलक्षण पर्व

धूमधाम से मनाया गया संकल्प दिवस

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ चल रहे 47वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर शनिवार दिनांक 25 मई को संकल्प दिवस बहुत हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का जन्मदिवस 25 मई को आता है। इस दिन को श्री टोडरमल स्नातक परिषद संकल्प दिवस के रूप में मनाता है। डॉ. भारिल्ल के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर प्रात: अपने प्रवचन में डॉ. भारिल्ल ने जब अपने माँ-पिताजी एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी को अपने जीवन के उपकारी पुरुष के रूप में स्मरण किया तो सारी सभा भावविभोर हो गयी। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सायंकाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रवचन के उपरान्त डॉ. भारिल्ल एवं बड़े दादा को उनके शिष्यगण अपने हाथों से तोरणद्वार बनाकर सभास्थल तक लाये। इसके बाद फैडरेशन के राजस्थान प्रान्त के अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, ब्र. रमाबेन देवलाली, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, श्री कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना ने अपने संस्मरण सुनाते हुए डॉ. भारिल्ल के बहुआयामी व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए उन्हें जन्मदिवस की शुभकामना दी एवं इसी प्रकार वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में आजीवन जुड़े रहने की कामना की।

इसी अवसर पर श्रीमती सीमा जैन उदयपुर द्वारा 'डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने पर उनका सम्मान किया गया। ज्ञातव्य है कि श्रीमती सीमा जैन टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक एवं फैडरेशन के राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर की धर्मपत्नी है।

भोपाल से पधारे श्री विनयप्रकाशजी एडवोकेट ने सकल तारण-तरण दिगम्बर जैन समाज की ओर से डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया। स्नातक परिषद ने डॉ. भारिल्ल को जन्मदिवस के उपहार स्वरूप कलम भेंट की, ताकि वे अपने करकमलों से निरन्तर जिनवाणी लिखते रहें। तत्पश्चात् स्नातक परिषद के उपस्थित सभी सदस्यों ने खड़े होकर डॉ. भारिल्ल के समक्ष आजीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया, जो निम्नानुसार है-

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

सम्पादकीय -

श्रुतपंचमी के अवसर पर -

जैन अध्यात्म

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जैन अध्यात्म क्या है? जैनधर्म में अध्यात्म किसे कहते हैं? यहाँ यह बताने का प्रयास किया गया है।

शुद्ध आत्मा की प्रतीति या श्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है तथा उस शुद्ध स्वभाव को जानना सम्यग्ज्ञान एवं उसी में जमना, रमना, समा जाना सम्यक् चारित्र है। इन तीनों का स्वरूप जानना ही जैनअध्यात्म का ज्ञान है।

सभी जीव संसार के दुखों से मुक्त होना चाहते हैं; क्योंकि सच्चा सुख मोक्ष अवस्था में ही है। वह मोक्षावस्था जैनअध्यात्म के बिना संभव नहीं है, अतः जैनअध्यात्म का जानना अत्यावश्यक है।

अधि+आत्म = अध्यात्म अर्थात् आत्मज्ञान ही अध्यात्म ज्ञान है। स्वभाव से तो सभी ज्ञान एवं सुख स्वभावी है ही; स्वभाव से कोई छोटा-बड़ा नहीं है, परन्तु संसार अवस्था में जीव अपने ज्ञान स्वभाव को भूला है तथा पर पदार्थों में इष्टानिष्ट की मिथ्या कल्पना करके रागी-द्वेषी हुआ अनादि से जन्म-मरण के दुःख भोग रहा है।

जैनधर्म के अनुसार सृष्टि अनादि-अनन्त हैं, स्व-संचालित है, इसमें ६ द्रव्य हैं? १. जीव जो संख्या में अनन्त हैं, २. पुद्गल अनन्तानन्त हैं, ३. धर्मद्रव्य एक हैं ४. अधर्म द्रव्य एक है ५. आकाश द्रव्य एक है तथा ६. कालद्रव्य असंख्य हैं। जो जीव स्वयं (निज आत्मा) को जानकर, पहचानकर स्वयं में जम जाता है, रम जाता है, समा जाता है वह जीव मात्र अन्तमुहूर्त में संसार के कारणभूत मोह-राग-द्वेष-रूप अष्ट कर्मों का विनाश करके परमात्मा बन जाता है, अनन्तकाल के लिए अनन्त सुख प्राप्त कर लेता है।

ऐसी अवस्था प्राप्त करने के लिए हमें सर्व प्रथम उन मुक्त आत्माओं की शरण में जाना होता है, जिन आत्माओं ने वह सुख प्राप्त कर लिया है, ऐसे अरहन्त सिद्ध भगवन्तों की शरण लेकर ही अपने आत्मा को जानने का प्रयास करना होता है। एतदर्थ अरहन्त भगवान की शरण में रहकर उनके द्वारा कहे एवं आचार्यों द्वारा लिखे गये वीतरागता के पोषक शास्त्रों का अध्ययन मनन-चिन्तन जरूरी है।

एक अन्तमुहूर्त तक लगातार आत्मा में स्थिर होकर क्रोध-मान-माया और लोभ इन चार कषायों के अभावपूर्वक स्वसम्मुख हुआ जीव पाँचों इन्द्रियों के विषयों को जीतकर अनन्त दर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्त सुख एवं अनन्त शक्ति प्राप्त कर अनन्तकाल को परमात्म पद प्राप्त कर लेता है।

दूसरे प्रकार से कहें तो चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अविरत सम्यग्दृष्टि जीव को **जिन** कहते हैं। छठवें-सातवें गुणस्थानवर्ती मुनिराज को **जिनवर** तथा ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय और अन्तराय - इन चार घाती कर्मों का अभाव करनेवाले तेरहवें गुणस्थानवर्ती आत्मा को जिनवर वृषभ (अरहन्त) कहते हैं। वे अरहन्त ही शेष अघातिया कर्मों का अभाव कर सिद्ध भगवान होते हैं। जैनधर्म में कोई अलग से ईश्वर नहीं होता।

इन जिनवर वृषभ (अरहंत देव) द्वारा प्रसारित दिव्यध्वनि को आचार्यों ने चार अनुयोगों द्वारा अर्थात् चार शैलियों द्वारा, चार कथन पद्धतियों द्वारा प्रतिपादित किया है, जिन्हें चार अनुयोग कहते हैं जो इसप्रकार हैं - (१) प्रथमानुयोग (२) चरणानुयोग (३) करणानुयोग और ४. द्रव्यानुयोग।

प्रथमानुयोग में ६३ शलाका महापुरुषों के चरित्रों द्वारा अज्ञानी, अल्पज्ञानी जीवों को सन्मार्ग दर्शन दिया जाता है, मोक्षमार्ग में लगाया जाता है, इस अनुयोग में संसार की विचित्रता, पुण्य-पाप का फल, महन्त पुरुषों की प्रवृत्ति इत्यादि के निरूपण से जीवों को धर्म में लगाया जाता है। यह अनुयोग मुख्यतया तुच्छबुद्धि जीवों के प्रयोजन से, अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टियों के प्रयोजन से लिखा गया है। जिन्हें तत्त्वज्ञान हो गया है, उन्हें भी ये प्रथमानुयोग के कथन उदाहरण रूप भासित होने से निरर्थक नहीं हैं।

करणानुयोग में कर्मों के विशेष कथन द्वारा तथा त्रिलोकादि की रचना निरूपित करके जीवों को धर्म में लगाया जाता है। 'करण' का अर्थ परिणाम (भाव) और गणित भी होता है। गणित की मुख्यता से इस शैली में त्रिलोकादि का स्वरूप बताया जाता है तथा गुणस्थान आदि से जीव के भावों का कथन होता है।

चरणानुयोग में नानाप्रकार से धर्म के साधनों का निरूपण करके जीवों को धर्म में लगाया जाता है, इसमें जीवों के आचरण की मुख्यता से निरूपण होता है।

द्रव्यानुयोग में द्रव्यों व तत्त्वों का निरूपण करके जीवों को धर्म में लगाते हैं। इस कथन शैली में आत्मज्ञान की मुख्यता होती है।

अपने वर्ण्य विषय 'जैन अध्यात्म' को जानने के लिए द्रव्यानुयोग के शास्त्रों का अध्ययन ही विशेष कार्यकारी है, क्योंकि 'जैन अध्यात्म' द्रव्यानुयोग से ही सम्बन्धित है।

द्रव्यानुयोग में आचार्यश्री कुन्दकुन्ददेव के समयसार, प्रवचनसार, नियमसार और पंचास्तिकाय ग्रन्थ प्रमुख हैं। कविवर बनारसीदास के नाटक समयसार में भी आत्मा की मुख्यता से जीवादि सात तत्त्वों का वर्णन है।

वैसे तो सम्पूर्ण जिनागम एक आत्मज्ञान के लिए ही समर्पित हैं; परन्तु प्रथमानुयोग में महापुरुषों चारित्रों का, करणानुयोग में कर्मों की विचित्रता का तथा चरणानुयोग में आचरण की मुख्यता से कथन होता है। एकमात्र द्रव्यानुयोग में ही जीवादि सात तत्त्व, छहद्रव्य तथा मोक्ष के साक्षात् कारण निश्चय सम्यग्दर्शन निश्चय सम्यक्ज्ञान एवं निश्चय सम्यक्चारित्र का निरूपण होता है। **(क्रमशः)**

देवलाली (नासिक) में -

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ चल रहे 47वें आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर रविवार दिनांक 26 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विपुल के. मोटानी मुम्बई (राष्ट्रीय अध्यक्ष-फैडरेशन) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुभाषजी चांदीवाल मुम्बई, श्री विलासजी जैन शिकागो व श्री जयेशभाई टोलिया के अतिरिक्त फैडरेशन के राष्ट्रीय व प्रान्तीय कार्यकारिणियों के सदस्यगण एवं डॉ. भारिल्ल इत्यादि सभी विद्वत्गण मंचासीन थे।

सभा की प्रारम्भ पण्डित अभयजी शास्त्री के मंगलाचरण द्वारा हुआ। संचालन कर रहे पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई (राष्ट्रीय महामंत्री-फैडरेशन) ने दिनांक 16 दिसम्बर 2012 को अमायन में ब्र. रवीन्द्रजी की शिष्या ब्र. बहिन के साथ घटित घटना का उल्लेख करते हुए सदन में प्रस्ताव रखा कि अ.भा. जैन युवा फैडरेशन इस अवसर पर पूरी तरह पीड़ित परिवार एवं ब्र. रवीन्द्रजी के साथ है और इस घटना से सबक लेते हुए फैडरेशन समाज को एकजुट करके उसके नैतिक एवं धार्मिक जागरण के विशाल कार्यक्रम को अपने हाथ में ले लेवें ताकि भविष्य में इसप्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

इसका समर्थन करते हुए श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित सोनूजी शास्त्री अमहदाबाद, श्री मंथनजी गाला मुम्बई, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, श्री कान्तीभाई मोटानी मुम्बई, श्री प्रमोदजी मोदी सागर, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई इत्यादि ने अपने विचार रखते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया और अपने सुझाव भी प्रस्तुत किये। ब्र. सुमतप्रकाशजी ने भी इस कार्य की उपयोगिता बताते हुए संचार के सभी आधुनिक साधनों का प्रयोग करते हुए जनजागरण की आवश्यकता बतलाई और फैडरेशन द्वारा यह कार्य अपने हाथ में लेकर शीघ्रता से पूर्ण करने की कामना की।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने समुचित मार्गदर्शन देते हुए सभा से प्रस्ताव पारित करने का आग्रह किया। अन्त में करतल ध्वनि के साथ सभा ने सर्वानुमति से प्रस्ताव पारित कर दिया। फैडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विपुल मोटानी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए प्रस्ताव का स्वागत किया। अन्त में फैडरेशन के राष्ट्रीय गीत मैं ज्ञानानन्द स्वभावी के समूहगान के साथ सभा विसर्जित हुई।

समाज के नैतिक उत्थान हेतु -

फैडरेशन द्वारा संचालित "चेतना अभियान" में आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं -

- उक्त अभियान की सूचना अधिकतम लोगों तक पहुंचाकर।
- अधिकतम लोगों को इस अभियान से जोड़कर।
- समाज के विभिन्न वर्गों तक इस अभियान का संदेश पहुंचाकर।
- स्वयं संकल्प पत्र भरकर एवं अन्य अधिकतम लोगों से भरवाकर।
- सोश्यल नेटवर्किंग साइट्स पर संबन्धित सामग्री प्रकाशित कर।
- उपयोगी सूचनाएं और प्रचार सामग्री हम तक पहुंचाकर।
- अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए, सामाजिक सुरक्षा के उपायों में सहयोगी बनकर।
- समाज में जागरूकता पैदा करने वाली गतिविधियों में शामिल होकर एवं ऐसी ही गतिविधियाँ स्वयं आयोजित /संचालित कर।

- महामंत्री

प्रस्ताव

वर्तमान में देश मे घटित हो रही समाज विरोधी घटनाओं ने प्रत्येक सामान्य नागरिक को आन्दोलित कर दिया है और हमारा समाज भी आग की इन लपटों की तपन से अप्रभावित नहीं रहा है।

हमारा समाज न सिर्फ उक्त घटनाओं के दुष्प्रभावों से मुक्त रहे वरन् सारे देश को इस संकट से उबारने के लिये एक सक्रिय मार्गदर्शक का काम करे इस हेतु यह सदन प्रस्तावित करता है कि समाज में, विशेषकर युवा वर्ग एवं बालवर्ग में नैतिक उत्थान हेतु विशेष प्रयास किये जायें।

उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से जीवन में उज्ज्वल चरित्र की मर्यादायें रेखांकित की जाये और उनके महत्व को स्थापित किया जाये, प्रचारित किया जाये।

हमारी माँ, बहिन और बेटियों की शील रक्षा का यह उपक्रम मौहल्ले और गाँव-नगर के सभी जनसामान्य (प्रत्येक धर्म और जाति के लोगों) के सहयोग के बिना संभव नहीं है। तदर्थ फैडरेशन की सभी शाखायें समाज के अन्य संगठनों के सहयोग से उक्त सभी लोगों से संपर्क स्थापित कर इस विषय में सहमति और सहयोगात्मक सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करें।

वर्तमान में इस विषय में आदरणीय बाल ब्र. रवीन्द्रजी एवं उनके शिष्य ब्र. सुमतप्रकाशजी के विशिष्ट विचार हैं। इस प्रस्ताव के माध्यम से यह सदन उनसे भी निवेदन करता है कि इस पुण्य कार्य में अपना मार्गदर्शन ही नहीं, सक्रिय सहयोग भी प्रदान करें। इस कार्य में यह संगठन पूरी तरह उनके साथ है।

आवश्यक निर्देश : फैडरेशन की सभी शाखाएं अपनी सामान्य सभा की मीटिंग बुलाएं, जिसमें स्थानीय जैन समाज को भी आमंत्रित करें और उक्त प्रस्ताव अनुमोदित करवायें। उक्त अनुमोदन की सूचना हमारे केन्द्रीय को भिजवा दें, जिसे 'जैनपथप्रदर्शक' में प्रकाशित किया जाएगा।

जिनवाणी की सुरक्षा का उपाय

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

श्रुतपंचमी पर्व जिनवाणी की सुरक्षा का पर्व है। महागिरि गिरनार की गहरी गुफा में अन्तर्मग्न आचार्य धरसेन का ध्यान रात्रि के अन्तिम प्रहर में भग्न हुआ तो वे श्रुतपरम्परा की सुरक्षा के विकल्प से उद्‌विग्न हो उठे। वे सोचने लगे कि बुद्धि के निरन्तर ह्रास के कारण भगवान महावीर की श्रुतपरम्परा अब केवल सुनकर सीखने के आधार पर नहीं चल सकती; अतः अब उसे लिपिबद्ध करना अनिवार्य हो गया है।

तदनुसार उन्होंने अपने योग्यतम शिष्यों को आदेश दिया कि तुम इसे लिपिबद्ध करो और उनके आदेश की पालना करते हुये आचार्य पुष्पदन्त और भूतबली ने आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले ग्रन्थराज षट्‌खण्डागम की रचना की। ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी के दिन ही इस श्रेष्ठतम षट्‌खण्डागमरूप प्रथम श्रुतस्कन्ध का अवतार हुआ था। इसी उपलक्ष्य में यह दिन श्रुतपंचमी पर्व के रूप में प्रचलित हुआ है।

इसीलिये मैं कहता हूँ कि यह श्रुतपंचमी पर्व जिनवाणी की सुरक्षा का महान पर्व है।

लगभग उसी के आस-पास समर्थ आचार्य कुन्दकुन्ददेव द्वारा परमागमरूप द्वितीय श्रुतस्कन्ध की रचना हुई। उसके बाद तो ऐसा सिलसिला आरंभ हुआ कि अनेकानेक महान सन्तों द्वारा हजारों ग्रन्थ लिखे गये, ग्रन्थों के अम्बार लगने लगे; किन्तु समुचित सुरक्षा के अभाव में बहुत कुछ तो कालकवलित हो गये, कुछ विरोधियों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये; परन्तु आज भी हमारे पास अनेकानेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थराज सुरक्षित हैं, मुद्रण के इस युग में सभी को सहज भाव से उपलब्ध हैं, आत्मकल्याण के लिए पर्याप्त हैं और उनमें भगवान महावीर की वाणी का मूल सुरक्षित है।

जो भी हो; जो हो गया, सो हो गया; पर आज हमें जो भी ग्रन्थ उपलब्ध हैं, उनकी सुरक्षा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व हमारा है। जिसे न केवल हमें स्वीकार ही करना है, अपितु प्राणपण से निभाना भी है। लोक में जब यह कहा जाता है कि **जिम्मेवारी किसकी?** तो इसके उत्तर में यही तो कहा जाता है कि - **जो अनुभव करे, उसकी।**

अतः आज हमारे चिन्तन का मूल विषय यही है कि आखिर हम अपनी अद्‌भुत निधिरूप श्रुतपरम्परा की सुरक्षा करें तो करें कैसे?

एक सहज और सरल उपाय तो यह हो सकता है कि हम उसे ताम्रपत्रों पर लिखाकर जमीन में गाड़ दें, संगमरमर के पाटियों पर उत्कीर्ण कराके जिनमंदिरों और स्वाध्याय भवनों की दीवालों पर जड़ दें, विभिन्न भाषाओं और लिपियों में मुद्रित कराके लाखों की संख्या में विश्व के कोने-कोने में पहुँचा दें।

यद्यपि इस दिशा में हम बहुत कुछ सक्रिय भी हैं; तथापि जिस रूप में और जिस मात्रा में हमारी सक्रियता है; वह पर्याप्त नहीं है, ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही है।

जो कुछ भी हो; पर इससे इतना तो हुआ ही है कि हमारी यह अमूल्य निधि आज भी बहुत-कुछ सुरक्षित है। ताम्रपत्रों पर लिखकर जमीन में गाड़ देने की उपयोगिता मात्र इतनी ही है कि जब प्राकृतिक प्रकोप से प्रलय जैसी स्थिति उत्पन्न हो और सभी शास्त्रभंडार स्वाहा हो जावें; तब भी यदि कभी खुदाई में वे ताम्रपत्र हमारे सद्‌भाग्य से किसी को प्राप्त हो जाये तो हमारी निधि पुनर्जीवित हो सकती है।

इसीप्रकार संगमरमर के पाटिये पर लिखाने का लाभ भी मात्र इतना ही है कि लिपिबद्ध या मुद्रित शास्त्रों की आयु भी सीमित ही है; प्राकृतिक आक्रमणों और आतंकवादियों के विध्वंस से उनका विनाश होने पर संगमरमर के पाटियों से लेकर उन्हें दुबारा लिखाया जा सकता है, छपाया जा सकता है। इससे अधिक उनकी कोई उपयोगिता नहीं; क्योंकि मंदिरों में खड़े-खड़े या चलते हुए उनका स्वाध्याय करना संभव नहीं है।

आजतक किसी को भी उनका इसप्रकार स्वाध्याय करते हुए नहीं देखा गया है। वे तो मात्र दर्शन और प्रदर्शन की वस्तु बनकर ही रह जाते हैं।

शास्त्रों को विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कराके विभिन्न लिपियों में मुद्रित कराके विभिन्न देशों और देश के कोने-कोने में पहुँचा देने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि भगवान महावीर की यह वाणी- जिनवाणी देश-विदेश में विभिन्न भाषावासियों को सहज उपलब्ध रहेगी; अनेकानेक लोग स्वाध्याय कर इसका लाभ उठा सकेंगे, उठायेंगे और उठा भी रहे हैं।

एक क्षेत्र में, एक भाषा में सीमित रहने पर सबसे बड़ा खतरा यह है कि यदि उस क्षेत्र में बाढ आ गई, सुनामी आ गई, आग लग गई, तूफान आ गया और सम्पूर्ण साहित्य उसकी भेंट चढ गया तो फिर सब-कुछ समाप्त ही समझो; किन्तु यदि वह सम्पूर्ण विश्व के लगभग सभी देशों में, सभी भाषाओं में उपलब्ध रहे तो फिर कोई खतरा नहीं है; क्योंकि सभी देशों और सभी भाषाभासियों का एक साथ सर्व विनाश तो संभव नहीं है। कदाचित् ऐसा हो भी गया तो हम जिनवाणी बचाकर भी क्या करेंगे; क्योंकि तब तो उसे पढने वाला भी कोई नहीं रहेगा।

यह तो आप जानते ही हैं कि **'बारह कोस में पानी बदले और बारह वर्ष में वाणी'**। भाषा में भी निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं और सौ वर्ष में तो भाषा का कायाकल्प हो जाता है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन हो जाता है। ऐसी स्थिति में यदि भगवान महावीर की वाणी को जन-जन तक पहुँचाना है तो उसे भी निरन्तर युग के अनुरूप भाषा और शैली में ढालना होगा।

यदि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी कुन्दकुन्द की वाणी को आजकल की चालू गुजराती भाषा में प्रस्तुत नहीं करते तो क्या संस्कृत

और प्राकृत भाषा से पूर्णत: अपरिचित व्यापारी गुजराती समाज कुन्दकुन्द वाणी का रहस्य समझ सकती थी ? नहीं, कदापि नहीं; तो फिर हमारा भी यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उनकी वाणी को हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आदि अनेकानेक भाषाओं में अनूदित कर सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने का महान कार्य करें।

न केवल कानजी स्वामी की वाणी को, अपितु कुन्दकुन्दाचार्य आदि सभी सन्तों, पंडित टोडरमलजी जैसे सभी तलस्पर्शी विद्वानों का सत्साहित्य आधुनिकतम शैली और वर्तमानकालीन भाषा में जन-जन तक पहुँचाने का महान कार्य हमें करना है।

इसके बिना जिनवाणी की सुरक्षा संभव नहीं है। ध्यान रहे अकेले संगमरमर के पाटियों पर जड़ाने से हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती।

हम अपने गिरेबान में झांककर देखें कि हम जिनवाणी को जन-जन तक पहुँचाने की दिशा में कितना प्रयास कर रहे हैं ? यदि हमसे कुछ नहीं बनता, हमें पढना-पढाना नहीं आता, लिखना-लिखाना नहीं आता और इसे जन-जन तक पहुँचाने में भी कोई रस नहीं है तो कम से कम इस महान कार्य में लगे लोगों की अनुमोदना करके ही पुण्य कमा लें; विरोध करके, अरुचि दिखाकर जिनवाणी के विनाश का महान अपराध तो न करें।

यदि प्राकृत-संस्कृत में निबद्ध जिनवाणी को पढनेवाले ही नहीं रहे तो क्या होगा ताम्रपत्रों और संगमरमर के पाटियों से ? जिनवाणी सुरक्षा का महान कार्य तो चेतन बालकों की चित्तभूमि पर जिनवाणी को उत्कीर्ण करने से होगा और यह सब इतना आसान नहीं है कि जितना ताम्रपत्र और संगमरमर के पाटियों पर लिखाना है; क्योंकि उसमें ज्ञान-ध्यान का तो काम ही नहीं है; बस वह सब तो मात्र पैसों का खेल है।

उसमें सम्पूर्ण कार्य धातु और पत्थरों पर होना है और बिना पढे-लिखे कारीगरों को करना है; पर इसमें सब-कुछ चेतन पर होना है, चेतन बालकों की चित्तभूमि पर जैनदर्शन के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा किया जाना है। अत: इसमें एक तो कच्चा माल मिलना कठिन है और दूसरे उन्हें गढने वाले सुयोग्य विद्वानों का मिलना भी तो सहज नहीं है। पल्लवग्राही पाण्डित्य के धनी वाचाल विद्वान तो गली-गली में प्राप्त हो जावेंगे; पर जैनतत्त्वज्ञान की गहराई तक पकड़ रखनेवाले आध्यात्मिक रुचि सम्पन्न और इस महान कार्य में जीवन समर्पण करनेवाले विद्वानों का उपलब्ध होना तो असंभव जैसा ही है।

ताम्रपत्रों और संगमरमर के पाटियों की आयु तो हजारों वर्ष हो सकती है; लिपिबद्ध और मुद्रित शास्त्र भी सैंकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रह सकते हैं; पर विद्वानों के तैयार होने में ही आधी उमर बीत जाती है, जबतक उन्हें ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त होती है कि समाज उनकी बात सुने, उनके द्वारा लिखित साहित्य को पढ़े; तब तक उनके बाल सफेद हो चुके होते हैं, वे अनेक बीमारियों की चपेट में आ चुके होते हैं और उन्हें अगले भव में जाने की तैयारी में जुट जाना पड़ता है। कितना अस्थिर है यह प्रयास।

यदि हमें जिनवाणी की सुरक्षा करनी है तो हमें ऐसे प्रतिभाशाली छात्रों की खोज करनी होगी, जो पूरी तरह समर्पित होकर जिनागम का गहरा अध्ययन करें, अपने जीवन को अन्य व्यापारादि कार्यों में ही बर्बाद करने के लिये उत्सुक न हो, पूरा जीवन जिनागम की सेवा में ही समर्पित करदें। फिर उन्हें घड़े सम घड़ने वाले समर्थ गुरुओं को जुटाना होगा।

यदि यह पढ़ने-पढ़ाने का काम निर्विघ्न कुछ काल तक चलता रहा तो जो भी विद्वान तैयार होंगे, उनमें सैकड़ों में एक विद्वान इस काम के लिये समर्पित होता है, हजार में एक वक्ता होता है और दस हजार में एक लेखक होता है। इसलिये यह प्रक्रिया निरंतर चलते रहना अत्यंत आवश्यक है।

कितना श्रमसाध्य है यह कार्य - इसका आभास हमें नहीं है, इसकी महिमा हमें नहीं है; यही कारण है कि यह जिनवाणी माता आज असुरक्षा के घेरे में है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावनायोग से आज हम इस स्थिति में हैं कि इस दिशा में कुछ कर सकें। उनके मंगल आशीर्वाद से हमने श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर की छत के नीचे बैठकर इस दिशा में कुछ प्रयास आरंभ किये थे, जो सभी के सहयोग से आज परवान चढ़ रहे हैं। जैनदर्शन के पाँच सौ से अधिक ठोस विद्वान तैयार हुये हैं, 400 वीतराग-विज्ञान पाठशालाओं के माध्यम से 4,43,319 छात्रों ने जैन तत्त्वज्ञान को सीखने के साथ-साथ सदाचार सम्बंधी संस्कार प्राप्त किये हैं, करोड़ों की संख्या में सत्साहित्य घर-घर पहुँचा है।

सत्साहित्य में जहाँ एक ओर कुन्दकुन्दाचार्य आदि आचार्यों के साथ-साथ पण्डित टोडरमल जैसे विद्वानों के साहित्य को लाखों की संख्या में घर-घर पहुँचाया गया है; वहीं दूसरी ओर उनकी सरल भाषा में टीकायें, उनके अनुशीलन और उनके सार को जन-जन तक पहुँचाया है।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रवचनों के दस हजार से भी अधिक पृष्ठों को लाखों की संख्या में सत्तर करोड़ लोगों की भाषा राष्ट्रभाषा हिन्दी बोलने वाले लोगों तक पहुँचाया है।

क्रमबद्धपर्याय, धर्म के दशलक्षण, परमभावप्रकाशक नयचक्र जैसी मौलिक कृतियों के माध्यम से जो क्रान्ति की है, उसने लाखों लोगों को आन्दोलित किया है।

हम समझते हैं कि हमने अपनी शक्ति के अनुसार अपना उत्तरदायित्व बखूबी निभाया है और न केवल स्वामीजी के मिशन को अपितु कुन्दकुन्दाचार्यादि आदि आचार्यों, पण्डित टोडरमलजी जैसे विद्वानों के कार्य को भी कुछ न कुछ आगे बढ़ाया है और हमें पक्का विश्वास है कि आगे भी हमारे यहाँ तैयार हुये विद्वान इस कार्य को तेजी से आगे बढ़ायेंगे।

हम जानते हैं कि हमारा यह प्रयास ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही है; अत: इस प्रयास को और आगे बढ़ाया जाना चाहिये।

जिनवाणी की सुरक्षा की भावना रखनेवाले आत्मार्थी भाई-बहिनों से इस श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर हम अनुरोध करना चाहते हैं कि धर्म के नाम पर अन्य व्यर्थ के कार्यों में अपनी शक्ति न लगाकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति को इस दिशा में समर्पित करें, समय और शक्ति का अपव्यय न करें। ●

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

117 सातवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

यदि सम्यग्ज्ञानी जीव आत्मा को प्रत्यक्ष जानते हैं तो फिर उन्हें कर्म वर्गणाओं को भी प्रत्यक्ष जानना चाहिए।

उक्त आशंका का निराकरण करते हुए पण्डितजी कहते हैं कि आत्मा को प्रत्यक्ष तो एकमात्र केवली ही जानते हैं, पर कर्मवर्गणाओं को अवधिज्ञानी भी प्रत्यक्ष जानते हैं।

तात्पर्य यह है कि आत्मा को प्रत्यक्ष जानने के आधार पर सम्यग्ज्ञानी मूर्तिक कार्माण वर्गणाओं को प्रत्यक्ष जानते होंगे – जो लोग ऐसा सिद्ध करना चाहते हैं; उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि आत्मा को प्रत्यक्ष तो एकमात्र केवलज्ञानी ही जानते हैं, अन्य कोई नहीं; पर कार्माण वर्गणाओं को तो क्षयोपशम ज्ञानवाले अवधिज्ञानी भी जान लेते हैं। तात्पर्य यह है कि कार्मण वर्गणाओं को अवधिज्ञानी प्रत्यक्ष जान लेते हैं; पर अवधिज्ञान में आत्मा को जानने की सामर्थ्य ही नहीं है।

इसीप्रकार जिसप्रकार दोज के चन्द्रमा का कुछ भाग खुला रहता है और बहुत कुछ भाग आच्छादित रहता है; उसीप्रकार आत्मा के कुछ प्रदेश ढंके रहते होंगे और कुछ खुले रहते होंगे।

इस आशंका के समाधान में पण्डितजी कहते हैं कि यह ढंकापन और खुलापन प्रदेशों की अपेक्षा नहीं, अपितु गुणों की अपेक्षा है।

इसीप्रकार 'व्यवहारसम्यक्त्व में निश्चयसम्यक्त्व गर्भित अर्थात् सदैव गमनरूप है' - यह लिखकर पण्डितजी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि निश्चय-व्यवहार सम्यग्दर्शन आगे-पीछे नहीं, निरंतर साथ ही रहते हैं। वस्तुतः बात तो यह है कि सम्यग्दर्शन तो एक ही है। जो वास्तविक सम्यग्दर्शन है, उसे निश्चय सम्यग्दर्शन और उसके साथ नियम से होनेवाला धार्मिक व्यवहार व्यवहार सम्यग्दर्शन है। ऐसी स्थिति में उनके आगे-पीछे होने का कोई प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

चिट्ठी का समापन करते हुए पण्डितजी कहते हैं –

''जो सम्यक्त्व संबंधी और अनुभव संबंधी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्षादिक के प्रश्न तुमने लिखे थे, उनका उत्तर अपनी बुद्धि अनुसार लिखा है; तुम भी जिनवाणी से तथा अपनी परिणति से मिलान कर लेना।

अर भाईजी, विशेष कहाँ तक लिखें, जो बात जानते हैं, वह लिखने में नहीं आती। मिलने पर कुछ कहा भी जाय, परन्तु मिलना कर्माधीन है; इसलिए भला यह है कि चैतन्यस्वरूप के अनुभव का उद्यमी रहना।

वर्तमानकाल में अध्यात्मतत्त्व तो आत्मख्याति-समयसार ग्रंथ की अमृतचन्द्र आचार्यकृत संस्कृतटीका ह्न में है और आगम की चर्चा गोम्मटसार में है तथा और अन्य ग्रन्थों में है।

जो जानते हैं, वह सब लिखने में आवे नहीं; इसलिए तुम भी अध्यात्म तथा आगम ग्रन्थों का अभ्यास रखना और स्वरूपानन्द में मग्न रहना।

और तुमने विशेष ग्रन्थ जाने हों सो मुझको लिख भेजना। साधर्मियों को तो परस्पर चर्चा ही चाहिए और मेरी तो इतनी बुद्धि है नहीं, परन्तु तुम सरीखे भाइयों से परस्पर विचार है सो बड़ी वार्ता है।

जबतक मिलना नहीं हो, तबतक पत्र तो अवश्य ही लिखा करोगे। मिती फागुन बदी ५, सं. १८११।[१]''

उक्त प्रकरण का भाव आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं –

''पत्र के अन्त में पण्डित श्री टोडरमलजी निर्मानतापूर्वक लिखते हैं कि ये उत्तर मैंने मेरी बुद्धि के अनुसार लिखे हैं, उन्हें जिनवाणी के साथ तथा अपनी परिणति के साथ तुम मिलान करना।[२]

प्रारम्भ में लिखा था कि चिदानन्दघन के अनुभव से तुमको सहजानन्द की वृद्धि चाहता हूँ और यहाँ अन्त में लिखते हैं कि निज स्वरूप में मग्न रहना। तथा स्वयं अपने को तत्त्व के अभ्यास का विशेष प्रेम होने से लिखते हैं कि कोई विशेष ग्रन्थ तुम्हारे जानने में आये हों तो मुझे लिख भेजना। साधर्मियों के तो एक-दूसरे से धर्म-स्नेहपूर्वक ऐसी धर्मचर्चा ही होना चाहिए। साधर्मी के साथ चर्चा-वार्ता, प्रश्न-उत्तर करने से विशेष स्पष्टता होती है, कहीं सूक्ष्म फर्क हो तो वह ख्याल में आ जाता है और ज्ञान की विशेष स्पष्टता होती है।[३]''

पण्डितजी ने मुलतानवाले भाइयों की शंकाओं के जो समाधान प्रस्तुत किये हैं; वे सभी आगम के अनुसार ही हैं और उन्हें तर्क की कसौटी पर भी कसा जा सकता है।

यह समझने-समझाने की भावना से गुरु-शिष्य या साधर्मी भाइयों के बीच होनेवाली वीतरागकथा (चर्चा) होने से पण्डितजी ने उदाहरणों के माध्यम से भी अपनी बात स्पष्ट की है; क्योंकि विभिन्न मतवाले विद्वानों के बीच जीतने की इच्छा से की जानेवाली विजिगीसुकथा (चर्चा) में तो उदाहरणों का प्रयोग वर्जित ही रहता है।

यद्यपि उन्हें अपने ज्ञान और प्रस्तुतीकरण पर पूरा भरोसा था; तथापि वे विनम्रतावश लिखते हैं कि मेरे दिये गये उत्तरों को आगम से मिलान करके ही स्वीकार करना। न केवल आगम से अपितु अपनी परिणति से भी मिलान करना।

यह उसीप्रकार की सलाह है कि जैसी सलाह प्रत्येक व्यापारी अपनी सन्तान को देता है कि हम से भी पैसों का कुछ लेन-देन करो तो गिनकर देना और गिनकर ही लेना। इसीप्रकार पण्डितजी की ही नहीं; प्रत्येक ज्ञानी की सभी साधर्मी भाइयों को यही सलाह होती है कि किसी के भी कथन को शास्त्रों से मिलान करके, तर्क की कसौटी पर कसकर और आत्मानुभव से मिलान करके ही स्वीकार करना चाहिए।

पण्डित टोडरमलजी के उक्त कथन का तात्पर्य यह है कि उनके द्वारा दिये समाधान आगम के अनुकूल तो हैं ही; ज्ञानीजनों की परिणति की कसौटी पर भी खरे उतरनेवाले हैं; क्योंकि उन्होंने स्वयं अपनी परिणति की कसौटी पर उन्हें पहले ही परख लिया है।

जिनवाणी के स्वाध्याय से समझे गये एवं गुरु या साधर्मी द्वारा समझाये गये वस्तुस्वरूप को इसीप्रकार कसौटी पर कसकर स्वीकार करने का आदेश आचार्य कुन्दकुन्द ने समयसार[४] में दिया है।

१. रहस्यपूर्णचिट्ठी : मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४९
२. अध्यात्म संदेश, पृष्ठ १२६ ३. वही, पृष्ठ १२८
४. समयसार, गाथा ५

अत: यह मात्र औपचारिकता नहीं है, अपितु मार्ग ही ऐसा है।

अत्यन्त उपयोगी उत्तर लिखने के उपरान्त भी उन्हें संतोष न था। यही कारण है कि वे लिखते हैं कि विशेष कहाँ तक लिखें; जो बात जानते हैं, वह लिखने में नहीं आती। **उन्हें भरोसा था कि मिलने पर कुछ विशेष समझाया जा सकता है, पर मिलना उस जमाने में अत्यन्त कठिन था।** इसलिए उनकी स्पष्ट सलाह थी कि आत्मा के अनुभव के प्रयास में निरन्तर उद्यमी रहना ही श्रेयस्कर है।

पत्र के अन्त में वे अध्यात्म की गहराई में जाने के लिए समयसार की आत्मख्याति टीका और सैद्धान्तिक प्रश्नों के समाधान के लिए गोम्मटसार आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय करने की सलाह देते हैं।

अपनी सलाह को दुहराते हुए वे लिखते हैं कि आध्यात्मिक और आगम ग्रन्थों का स्वाध्याय करना एवं स्वरूपानन्द में मग्न रहना।

उनकी दृष्टि में एकमात्र करने योग्य कार्य स्वाध्याय और ध्यान ही हैं।

सर्वान्त में वे यह भी लिखना नहीं भूलते कि तुम्हारे देखने में कोई विशेष ग्रंथ आये हों तो मुझे अवश्य बताना, जिससे मैं भी उन ग्रन्थों के स्वाध्याय का लाभ उठा सकूँ।

साधर्मी जीवों के तो परस्पर चर्चा ही चाहिए। पण्डितजी का अत्यन्त मार्मिक यह कथन सभी आत्मार्थी भाई-बहिनों के लिए अत्यन्त उपयोगी है; क्योंकि धर्म का नाता तो मूलत: तत्त्वज्ञान से ही है; अत: साधर्मी जन परस्पर तात्त्विक चर्चा के अतिरिक्त और क्या करेंगे?

इसप्रकार हम देखते हैं कि यह रहस्यपूर्णचिट्ठी; चिट्ठी नहीं, जिनागम और जिन-अध्यात्म का मर्म खोलनेवाला अनुपम ग्रन्थ है।

सभी आत्मार्थीजन इसका गहराई से स्वाध्याय कर आत्मकल्याण के मार्ग में रत रहें - इसी मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ। ●

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

''हम अपने गुरु डॉ हुकमचन्दजी भारिल्ल के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके समक्ष देव-शास्त्र-गुरु की साक्षीपूर्वक भगवान महावीर आदि तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि में उपदिष्ट कुन्दकुन्दादि आचार्यों, टोडरमलजी आदि विद्वानों एवं आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा प्रदर्शित वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का आजीवन संकल्प लेते हैं। हम सदैव तत्त्वज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु प्रयत्नशील रहेंगे।''

संकल्प का वांचन स्नातक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया और स्नातक परिषद के सभी सदस्यों एवं अन्य सभी विद्यालयों से आये प्रशिक्षणार्थी छात्रों ने जब ऊँचे स्वर से दोहराया, तब इस दृश्य को देखकर पूरी सभा भावविभोर हो गयी। इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप सभी को मेरी यही प्रेरणा है कि तात्कालिक परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना आलोचना प्रत्यालोचना से दूर रहकर जो भी व्यक्ति तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के काम में निरन्तर जुड़ा रहेगा। वह अवश्य सफल होगा। आप सभी अपने जीवन में सफल हों - यही मेरा आशीर्वाद है।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित अभयजी शास्त्री ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया। ●

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के चेतना अभियान में शामिल हों, सहयोग करें -

फैडरेशन के देवलाली अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव के सन्दर्भ में शाखाओं को निर्देश

- अपने मौहल्ले/गाँव/नगर में स्थित जैन समाज के अन्य संगठनों से समन्वय स्थापित कर इस दिशा में मिलकर साथ-साथ काम करने की कार्य योजना तैयार करें।

- अपने मौहल्ले/गाँव/नगर के जैन/जैनेतर सभी प्रबुद्ध नागरिकों की मीटिंग आयोजित कर नागरिकों में व्याप्त असुरक्षा के वातावरण को दूर करने और परस्पर सहयोग से एक स्वस्थ वातावरण निर्मित करने की दिशा में कदम उठाये जायें, यथा -

● मौहल्ले/गाँव/नगर के स्तर पर इस कार्य हेतु विशिष्ट समितियों की रचना की जावे।

● मौहल्ले/गाँव/नगर के लोग अपने यहाँ के माँ/बहिन/बेटियों की रक्षा करना अपना प्रथम कर्तव्य स्वीकार करें और कभी भी, कहीं भी यदि कोई असामान्य गतिविधि नजर आये तो तुरन्त अकेले या अन्य सम्बन्धित लोगों से मिलकर उसे रोकने का सक्रिय उपक्रम करें।

● समाज का प्रतिनिधि मण्डल गाँव/नगर के प्रशासकों (कलेक्टर, सरपंच, थानेदार आदि अधिकारी) से मिलकर समाज की सुरक्षा सुनिश्चित करने को कहा जाये और इस दिशा में काम करने हेतु उनका सहयोग सुनिश्चित करें, कार्य योजना तैयार करें और इस दिशा में त्वरित कार्यवाही हेतु विशिष्ट अधिकारी की नियुक्ति करवाने का प्रयास करें।

● समाज में जागरूकता पैदा करने हेतु कार्यक्रम आयोजित किये जायें। आज की जीवनशैली में व्याप्त विकृतियों से उत्पन्न खतरों के प्रति उन्हें सचेत करते हुए उपयुक्त, विवेकपूर्ण सात्विक और मर्यादापूर्ण जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जाये।

● आत्मरक्षा के उपलब्ध साधनों की जानकारी दी जाए।

● किसी संभावित खतरे की स्थिति में किये जा सकने वाले सुरक्षा उपायों से परिचित करवाया जाये।

● समाज के नैतिक स्तर के विकास हेतु, शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किये जायें।

● सदाचार से युक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी जाये।

फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने यहाँ इस दिशा में किये जाने वाले कार्यों की सूचना/सुझाव केन्द्रीय कार्यालय को अवश्य दें और यदि किसी भी प्रकार के सहयोग या मार्गदर्शन की आवश्यकता अनुभव करें तो अवश्य संपर्क करें।

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल, महामंत्री

पाठशाला का वार्षिकोत्सव संपन्न

फिरोजाबाद (उ.प्र.) : यहाँ हनुमानगंज के दि.जैन मन्दिर में पाठशाला का वार्षिकोत्सव समारोह संपन्न हुआ, जिसमें 100 से अधिक छात्रों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री भागचन्द्रजी जैन ने कहा कि प्रत्येक रविवार को आयोजित इस पाठशाला में शिक्षण कार्य श्रीमती सरोजलता जैन व श्रीमती पूनम जैन द्वारा किया जाता है, जो बहुत प्रशंसनीय है। पाठशाला की वार्षिक रिपोर्ट में श्री अनंतवीर जैन ने बताया कि बच्चों को धार्मिक ज्ञानवर्धन हेतु तीर्थस्थानों का भी भ्रमण एवं धार्मिक खेलों के माध्यम से ज्ञानवर्धन किया जाता है। कार्यक्रम का मंगलाचरण पाठशाला की छात्राओं ने एवं संचालन पण्डित अनुराजजी शास्त्री ने किया।

2 जून 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

संकल्प पत्र

मैं अन्तरात्मा की साक्षीपूर्वक संकल्प लेता हूँ कि –

– मैं भारतीय संस्कृति, धर्म, समाज, कुल और विधि द्वारा स्थापित एवं स्वीकृत मर्यादाओं का पालन करते हुए सदाचार से युक्त नैतिक जीवनशैली अपनाऊँगा।

– मैं अपने सभी सम्बन्धियों, सहयोगियों और मित्रवर्ग को भी इस कार्य हेतु प्रेरित करूँगा और इस कार्य में उनका सहायक बनूँगा।

– मैं किसी भी मां/बहिन/बेटी के शील पर, किसी भी प्रकार के आक्रमण को सहन नहीं करूँगा। मैं संविधान की मर्यादा में रहकर उसका प्रतिकार करूँगा और इस कार्य हेतु अपने सहयोगियों को संगठित करूँगा।

नाम – .... पिता का नाम – ....

जन्म तिथि – ....पता – ....

मोबाइल नं. –.................. ई-मेल :

हस्ताक्षर दिनांक – ....

फैडरेशन के सभी सदस्यों से अपेक्षा की जाती है कि वे सभी स्वयं इस संकल्प पत्र को भरें अपने-अपने सम्बन्धियों, सहयोगियों और मित्रों को भी इसके लिये प्ररित करें।

फैडरेशन की सभी शाखाओं से भी अपेक्षा है कि अन्य सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से समाज के सभी वर्गों में, सामाजिक/व्यापारिक/राजनैतिक संगठनों और संस्थाओं के सदस्यों से और शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा उक्त संकल्प पत्र भरवाने के लिए हर संभव प्रयास करें। **– महामंत्री**

फैडरेशन का प्रतिनिधि मण्डल मुख्यमंत्री से मिलेगा

दिनांक 16 दिसम्बर 2012 को मौ-भिण्ड (म.प्र.) में घटित घटना के सन्दर्भ में प्रदेश में समुचित सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने की व्यवस्था हेतु फैडरेशन का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान से मिलेगा। **– महामंत्री**

बोर्ड में प्रथम स्थान

1. सुश्री विपाशा जैन सुपुत्री पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ने राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय गनोड़ा में वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा में 88.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर **राज्य की वरीयता सूची में प्रथम स्थान** प्राप्त किया है। ज्ञातव्य है कि विपाशा जैन ने कक्षा 10वीं में 94 प्रतिशत अंक प्राप्तकर जैन तत्त्वज्ञान के अध्ययन व प्रचार-प्रसार की भावना व जैनदर्शन व संस्कृत के अध्ययन की अभिरुचि होने से शास्त्री करने का निर्णय लिया। ध्रुवधाम में अध्ययनरत छात्रों का भी बोर्ड परीक्षा परिणाम प्रतिवर्ष की भांति शत-प्रतिशत रहा है।

जैनपथप्रदर्शक व टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

शोक समाचार

जयपुर (राज.) निवासी श्री रमेशचन्दजी पापड़ीवाल का दिनांक 12 मई को 78 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के 25 वर्षों तक संयुक्त मंत्री व मानद मंत्री के रूप में रहे। आप महावीर दि.जैन उच्च मा. विद्यालय, महावीर पब्लिक स्कूल व महावीर कॉमर्स कॉलेज से 1973 से जुड़े रहे। आपका शिक्षा, विधि एवं संस्थाओं के कुशल संचालन के क्षेत्र में अपूर्व योगदान रहा। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त हो – यही भावना है।

शिविर संपन्न

श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद के तत्त्वावधान में 31 मई से 2 जून तक श्री दि. जैन मन्दिर वसुन्धरा साहिबाबाद (उ.प्र.) में विद्वत्परिषद के मंत्री डॉ. अशोक गोयल शास्त्री के संयोजकत्व में जिनदर्शन, पूजन, सामायिक विधि-विधान शिविर संपन्न हुआ। **– अखिल बंसल**

उज्ज्वल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक तथा भूतपूर्व अधीक्षक **पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर** ने एम.ए. (संस्कृत) में सम्पूर्ण छत्तीसगढ में मेरिट में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। इस उपलक्ष्य में उन्हें विश्वविद्यालय द्वारा रजत पदक प्रदान करने की घोषणा की गयी है।

इस उपलब्धि हेतु महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार उन्हें हार्दिक बधाई देता है एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127